सुरेन्द्र चतुर्वेदी – एक श्रद्धाँजलि :

‘बहुत रोयेगी शामे तन्हाई’

– गिरधारी लाल पाहवा

यकीन नहीं आता – हंसता, मुस्कराता हरदिल अज़ीज सुरेन्द्र चले गये। वह निर्भीक पत्रकार, सशक्त व्यंग्यकार और एक मस्त इंसान थे। लखनऊ का शायद ही कोई बुद्धिजीवी हो जो उनके बहुमुखी व्यक्तित्व से अप्रभावित रहा हो। चाहे पत्रकारों का जमघट हो, साहित्यकारों की गोष्ठी, संगीत की महफिल, चित्रकारों की बैठक या राजनैतिक नेताओं का अखाड़ा ; पंडित जी सब जगह छाये रहते थे। उनकी हर कला में गहरी पैठ थी। कोई उन्हें चौबे जी कहता, कोई पण्डित जी और कोई गुरुजी।

उनके समाचारों की भाषा बड़ी सटीक होती। आम खबर को भी अपनी सशक्त कलम से खास बना देने की अद्‌भुत क्षमता थी उनमें। बदलते राजनैतिक माहौल को परखने और उस पर तुरन्त कविता में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की सामर्थ्य थी उनमें। जैसे ही आपातकालीन स्थिति की घोषणा हुई, पण्डित जी ने कविता रची जो सेन्सर के बावजूद उन्होंने कवि सम्मेलनों में पढ़ी : –

तीस वर्ष चलते चलते हमारा काफला
एक शहरी चौराहे पर आकर रुक गया है
जहां आगे बढ़ने का संकेत देने वाली
हरी बत्ती बुझ गई है और
लाल बत्ती लपझप करके जल रही है
इन्हें दायें जाना है, उन्हें बायें जाना है
हमें आगे जाना है
लगता है अब कोई सिपाही आयेगा
जो हम सबको आगे बढ़ने का
एक ही रास्ता बतायेगा।।

राजनैतिक सन्नाटे पर दो माह पूर्व उन्होंने एक लघु कविता लिखी :

''जल नल में है, पान दुकान में

जलपान कहीं नहीं।

राज लखनऊ में है, नीति दिल्ली में

राजनीति कहीं नहीं।।

प्रेस सेंसरशिप रहते हुए भी उन्होंने संविधान के 42वें संशोधन के पारित होते ही एक कविता लिखी जिसे कई बार कवि सम्मेलनों में पढ़ा :

जब भी कोई नई तलवार बनती है

मेरा दिल कांप कांप जाता है

तलवार चाहे लोहे की हो,

चांदी की या सविधान की

– – – – –

अखबारनवीसी में उनका अंदाज ही निराला था। इतिहास का उनका अध्ययन इतना गहरा था कि वे विश्व इतिहास के किसी भी पक्ष पर अत्यंत गहराई से बोल सकते थे। कहते,''मैं पांच हज़ार साल का ब्राह्मण हूं।'' आजकल वह लखनऊ के अदब पर कार्य कर रहे थे और लखनऊ की पार्श्वभूमि पर बनने वाली फिल्म 'मजलिस' की स्क्रिप्ट तैयार कर रहे थे।

लखनउवा तहज़ीब का उन पर गहरा असर था। वह बड़े इत्मीनान से काम करते थे। राजनीति की 'अन्डरकरैन्ट' को बखूबी समझते और तौल कर शब्द लिखते। जब भी मैं उनसे कहता, पण्डित जी आप अमुख प्रेस कान्फ्रेंस में नहीं आये? वह फौरन कहते – ''हम स्पेशल करैस्पाण्डैंट हैं' – स्पेशल स्टोरी देंगे प्यारे।''

श्री नारायणदत्त तिवारी के मुख्यमंत्री नियुक्त होने का समाचार सबसे पहले 'नवभारत टाइम्स' ने छापा था, अन्य राष्ट्रीय पत्रों से तीन दिन पहले। इस पर उन्हें 500 रुपये नक़द और तीन वेतनवृद्धियां एक साथ मिलीं।

उनका मत था संवाददाता सम्पादक से महत्वपूर्ण है क्योंकि उसकी खबर पहले पेज पर छपती है जिसे हर पाठक पढ़ता है जबकि सम्पादकीय चौथे पृष्ठ पर छपते हैं और उन्हें बहुत कम प्रतिशत लोग पढ़ते हैं। अगर हमें

हिन्दी पत्रों का रूप निखारना है तो संवाददाता की – सड़क के आदमी की – हैसियत बनानी होगी। वह ही आम आदमी की भाषा को पत्रों में लाएगा। 'हमें हिन्दी टेलैक्स सेवा दें और फिर देखें अंग्रेज़ी से मुकाबला।'

एक बार चन्द पत्रकारों ने हमारे विरुद्ध विषैला प्रचार शुरु किया तो मैंने पण्डित जी का ध्यान आकृष्ट किया। हाज़िर जवाब पण्डित जी बोले,''ये साले तुझे बढ़ता हुआ नहीं देख सकते। तू जब भी बढ़ने की कोशिश करेगा, ये तुझे काटेंगे। ये मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते इसलिए तेरे पर वार करते हैं। तू मर्द बच्चे की तरह अपना काम किये जा। तेरे काम को देर सबेर मान्यता मिलेगी ही। वक्त आयेगा जब ये खुद आकर तेरे साथ खड़े होंगे।''

पण्डित जी जितने सशक्त कलमकार थे, उतने ही जोरदार वक्ता। किसी पत्र का विशेषांक हो, आकाशवाणी या दूरदर्शन का कार्यक्रम, उनके बिना अधूरे लगते। लेखन के अलावा परदे के माध्यम को भी वह बखूबी जानते थे। लखनऊ दूरदर्शन के एक वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने दर्जन भर फिल्में लिखीं और उन्हें ध्वनि दी। इनमें प्रमुख हैं 'उपलब्धियों का एक दशक (परिवार नियोजन), मिर्जा ग़ालिब, उत्तर प्रदेश में भूमि वितरण' और 'उत्तर प्रदेश के लघु उद्योग' जो हर केन्द्र से प्रदर्शित हुई।

कुछ माह पहले हम लोगों ने एक फिल्म सेमिनार आयोजित किया। सूचना राज्यमंत्री श्री रमेन्द्र वर्मा स्वागताध्यक्ष थे। मैंने संचालन का भार पण्डित जी को सौंपा। पण्डित ने कहा,''दादा रमेन्द्र वर्मा मंत्री नहीं, हमारे बड़े भाई हैं। हमने हर गलत काम सही ढंग से करना इन्हीं से सीखा है।'' दादा ने उसी तर्ज में जबाव देते हुए कहा,''सुरेन्द्र को मैंने किसी भी रूप में अपना नाम इस्तेमाल करने की अनुमति दी थी। इन्हें अधिकार है।''

दिसम्बर 1976 में उनके भांजे की बारात में हम बम्बई गये। वहां मैंने पण्डित को अपने कुछ फिल्मी दोस्तों से मिलाया। उनमें श्री रामानन्द सागर और कुन्दनकुमार भी थे। सागर साहब 'माई फेयर लेडी' के आधार पर 'प्रेम दीवानी' बनाने जा रहे हैं। पण्डित जी ने मूल नाटक को लन्दन में कई बार देखा था। अपने कुझ सुझाव पेश करते हुए उन्होंने सागर साहब से कहा,''यहां कार्यरत लेखकों के दिमाग में जंग लग गया है। वे घिसे–पिटे दायरे से बाहर नहीं निकल पाते। अगर फिल्मों में ताज़गी आयेगी, तो कोई बाहर का ही आदमी लायेगा।''

कमलेश्वर जी से मिलने हम लोग गये तो वहां भी फिल्मों में साहित्यकारों के प्रवेश की बात हुई। कमलेश्वर ने उनसे बम्बई शिफ्ट होने का आग्रह करते हुए कहा,''तुम ज़ीरो आवर पर अवेलेबल हो जाओ। मेरी मानो तो तुम यहां चले आओ।''

पण्डित जी ने कहा,''फिल्म गांव गांव जायेगी तो क्या लखनऊ नहीं आयेगी। हम तो उत्तर प्रदेश में ही इंडस्ट्री खड़ी करेंगे और इन सालों को पीट कर धर देंगे।''

उन्हें जब भी फुरसत मिलती, वह अपनी जन्मपत्री लेकर बैठ जाते। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा,''वर्ष 1977 मेरे लिए बहुत बुरा है।'' जब बम्बई से लौटे तो पत्नी ने पूछा,''आपके दिमाग से फितूर निकला?'' उन्होंने जबाव दिया,''बेगम, यह फितूर नहीं। यह साल —— कहीं जानलेवा न निकले ——।'' वह नराज़ होकर चली गई।

काफी हाउस उनका अड्डा था। वह कहते,''यह हमारा ड्राइंगरूम है।'' वहां बैठने वाला हर व्यक्ति चाहे जीवन के किसी भी क्षेत्र का क्यों न हो, उनके संपर्क में आया और यार बन गया। बम्बई प्रस्थान की पूर्व संध्या पर वह काफी हाउस आये। मेज के इर्द गिर्द कुर्सियां खिची। कहकहे शुरु हो गये। उनका ध्यान सामने टंगी तख्ती पर गया और उन्होंने शेर पढ़ा :—

साकी तेरे मैखाने में

जब हम नहीं होंगे।

सब टूटे हुए जाम

हमें याद करेंगे।।

आखिरी शाम क्लब में बैरे उन्हें सलाम कह रहे, नये साल की मुबारकबाद दे रहे थे। वह उन्हें बक्शीश बाट रहे थे। मुझ से बोले,''यह साल शनिचर से शुरु हुआ और इसके माथे पर मुहर्रम है। खुदा खैर करे।''

जिस रात उनका स्कूटर दुर्घटनाग्रस्त हुआ, उसी दोपहर पण्डित जी बम्बई से लौटने के बाद काफी हाउस आये। वह दो तीन मेज़ों पर दोस्तों से मिले। जब चलने लगे तो एक मित्र ने कहा,''चौबे जी, रुकिये तो।'' जबाव में उन्होंने शेर पढ़ा :

''अब तो जाते हैं

मैकदे से मीर।

फिर मिलेंगे अगर

खुदा लाया।''

उनका दाह संस्कार करके लोग जब काफी हाउस में इकट्ठे हुए तो एक अजीब सा सूनापन था। उदासी में सुरेन्द्र चतुर्वेदी का शेर गूंज रहा था :–

अकेला पर आबाद कर देता हूं वीराना,

बहुत रोयेगी मेरे जाने के बाद शामे तनहाई।।''

– 109/माडल हाउस

लखनऊ – 226001